मुंह देखकर भाषा पहचान लेते हैं बच्चे

यह एक आश्चर्यजनक बात है कि 4-6 माह के बच्चे बोलने वाले का मुंह देखकर समझ जाते हैं कि वह एक ही भाषा बोल रही है या बीच-बीच में भाषा बदल रही है। इससे भी ज़्यादा आश्चर्य की बात है कि 8 माह की उम्र तक बच्चे यह सामर्थ्य गंवा देते हैं। ये परिणाम कनाडा के शोधकर्ताओं द्वारा किए गए शोध से प्राप्त हुए हैं।

कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय की व्हिटनी वायकुम और उनके साथियों ने ये निष्कर्ष कई शिशुओं की विडियों फिल्म के विश्लेषण के आधार पर निकाले हैं। इनमें से कुछ शिशु एक-भाषा-भाषी परिवार के थे जबकि कुछ दो-भाषा-भाषी परिवार से। एक ही भाषा बोलने वाले परिवारों के शिशुओं में यह सामर्थ्य आठ माह की उम्र के बाद नहीं देखी गई।

इस अनुसंधान से पता चलता है कि भाषा सीखने के प्रारंभिक दौर में शिशुओं के लिए मुंह के आकार का बहुत महत्व होता है। शिशु वाणी के बारे में मिलने वाले कई दृश्य संकेतों और उनके साथ उत्पन्न होने वाली आवाज़ों को एक-दूसरे से जोड़कर देख पाते हैं। जैसे किसी आवाज़ के साथ बोलने वाले के मुंह का आकार कैसा बनता है। इसके आधार पर वे 'ऊ' और 'ई' जैसी आवाज़ के लिए मुंह के आकार में अंतर समझ पाते हैं। मगर वायकुम के दल ने यह पहली बार दर्शाया है कि इतने छोटे बच्चे मुंह का आकार देखकर यह भी ताड़ लेते हैं कि बोलने वाला एक ही भाषा बोल रहा है या दो भाषाएं बदल-बदलकर बोल रहा है।

सवाल यह है कि इस तरह का अनुसंधान किया कैसे गया। इसके लिए वायकुम के दल ने दो तरह के कुल 36 बच्चों का चयन किया। एक समूह में अंग्रेज़ी भाषी परिवारों के चार, छः और आठ माह के बच्चे थे जबकि दूसरे समूह में फ्रेंच व अंग्रेज़ी बोलने वाले परिवारों के छः व आठ माह के बच्चे थे। इन नन्हे-मुन्नों को एक वीडियो फिल्म दिखाई गई जिनमें कोई व्यक्ति पहले फ्रेंच या अंग्रेज़ी में कुछ बोलता था और फिर दूसरी भाषा में बोलने लगता था।

द्विभाषा-भाषी परिवारों के सारे शिशु उन फिल्मों को ज़्यादा ध्यान से देखते थे जिनमें बोलते-बोलते भाषा बदलती थी बजाय उन फिल्मों के जिनमें लगातार एक ही भाषा बोली जाती थी। इससे पता चलता है कि उन्होंने परिवर्तन पर ध्यान दिया है। पता चला कि अंग्रेज़ी भाषी परिवारों के चार और छः माह के बच्चों की प्रतिक्रिया ठीक ऐसी ही थी - वे भी इस परिवर्तन को ताड़ लेते थे। मगर आठ माह के बच्चे इस परिवर्तन को नहीं देख पाते थे। *साइन्स* में अपने परिणाम प्रकाशित करते हुए वायकुम व साथियों ने बताया है कि एक ही भाषा के संपर्क में आने वाले बच्चे आठ माह की उम्र तक मुंह के आकार को देखकर भाषा के बारे में निर्णय करने की क्षमता गंवा देते हैं।

दरअसल, उपरोक्त निष्कर्ष हैरान करने वाला है। छोटे बच्चों के लिए मुंह का आकार एक महत्वपूर्ण संकेत होता है। किसी भाषा को बोलते समय मुंह के आकार में परिवर्तनों का अनोखा पैटर्न होता है। यदि यह पैटर्न बदले तो बच्चे ज़रूर ध्यान देते हैं। इसलिए यह आश्चर्य की बात लगती है कि आठ माह की उम्र तक यह क्षमता समाप्त हो जाती है। वैसे लगभग इसी उम्र में बच्चे कई अन्य क्षमताएं भी गंवाते हैं। जैसे वे अन्य भाषाओं की उन ध्वनियों और लयों को नहीं पहचान पाते जो खुद उनकी भाषा में मौजूद न हों। बहरहाल, इससे इतना तो पता चलता ही है कि भाषा में ध्वनि के अलावा और भी कई संकेत होते हैं जो बच्चों को भाषा सीखने में मदद करते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***